श्रीसीतारामाभ्यां नमः

गोस्वामी श्रीतुलसीदासकृत

हनुमानबाहुक

(सटीक)

टीकाकार—

पं० महावीरप्रसाद मालवीय वैद्य "वीर"

श्रीगणेशाय नमः

गोस्वामी श्रीतुलसीदासकृत

हनुमानबाहुक

(सटीक)

टीकाकार-

पं० महावीरप्रसाद मालवीय वैद्य 'वीर'

२
४०

श्रीहरिः

प्रस्तावना

संवत् १६६४ विक्रमाब्दके लगभग गोस्वामी तुलसीदासजीकी बाहुओंमें वात-व्याधिकी गहरी पीड़ा उत्पन्न हुई थी और फोड़े-फुंसियोंके कारण सारा शरीर वेदनाका स्थान-सा बन गया था। ओषधि, यन्त्र-मन्त्र, त्रोटक आदि अनेक उपाय किये गये; किन्तु घटनेके बदले रोग दिनोंदिन बढ़ता ही जाता था। असहनीय कष्टोंसे हताश होकर अन्तमें उसकी निवृत्तिके लिये गोस्वामी तुलसीदासजीने हनूमान्‌जीकी वन्दना आरम्भ की। अञ्जनीकुमारकी कृपासे उनकी सारी व्यथा नष्ट हो गयी। यह वही ४४ पद्योंका 'हनुमानबाहुक' नामक प्रसिद्ध स्तोत्र है। असंख्य हरिभक्त श्रीहनूमान्‌जीके उपासक निरन्तर इसका पाठ करते हैं। और अपने वाञ्छित मनोरथको प्राप्त करके प्रसन्न होते हैं। संकटके समय इस सद्यःफलदायक स्तोत्रका श्रद्धा-विश्वासपूर्वक पाठ करना राम-भक्तोंके लिये परमानन्ददायक सिद्ध हुआ है। मेरे कनिष्ठ बन्धु पं० बेनीप्रसाद मालवीय, जो इस समय पुलिसट्रेनिंग-स्कूल मुरादाबादमें प्रोफेसर हैं, श्रीहनूमान्‌जीके अत्यन्त प्रेमी भक्त हैं। उन्हींके अनुरोधसे मैंने बाहुककी यह टीका तैयार की है। आशा है, रामानुरागी सज्जनोंको बाहुकके पद्योंका भावार्थ समझनेमें इससे बहुत कुछ सहायता प्राप्त होगी।

मिती चैत्र शुक्ल १ सोमवार
संवत् १९९० विक्रमीय

सज्जनोंका कृपाकांक्षी
महावीरप्रसाद मालवीय वैद्य 'वीर'
ज्ञानपुर—बनारस स्टेट (मिरजापुर)

॥ ॐ ॥

सुद्ध सत्वम् आसम अधीशः संयुक्तः मेघ वो मसी सत्यो अन्त्र यो मः मन्त्र -

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः इति ललाटे

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्, कण्ठ मे

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्, भुजाओं मे

ॐ तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम्.. हृदय मे
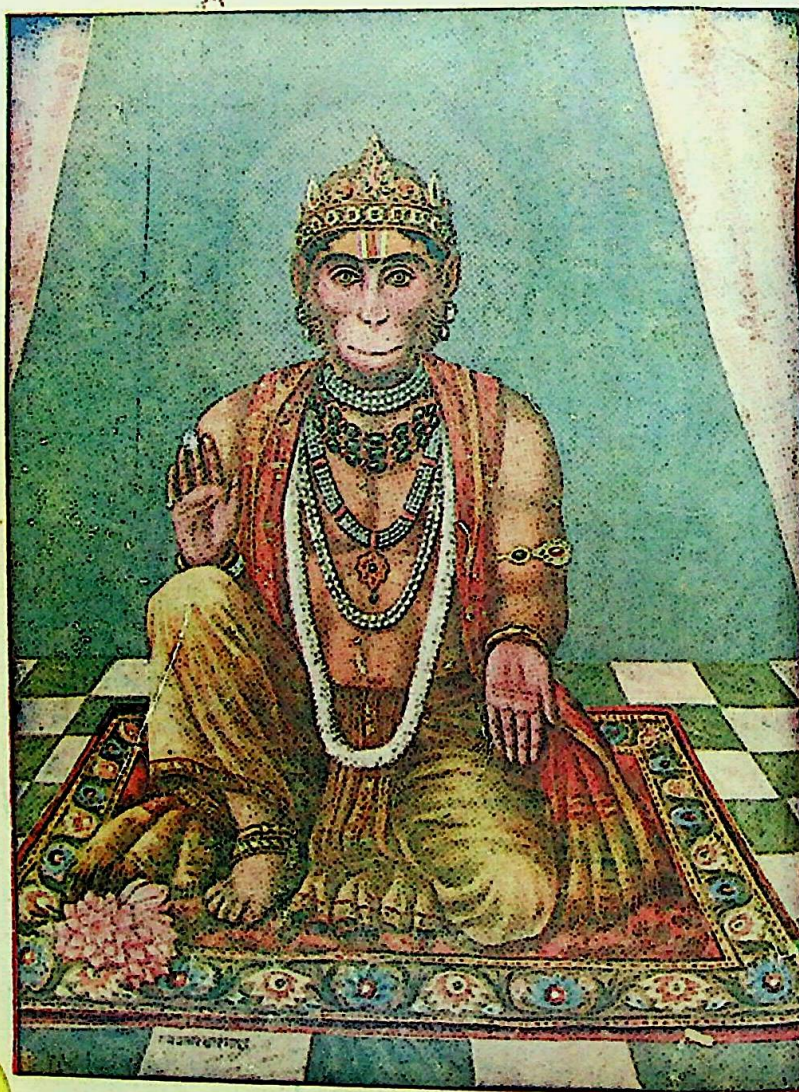
पवन-कुमार

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत

हनुमानबाहुक

छप्पय

सिंधु-तरन, सिय-सोच-हरन, रबि-बाल-बरन-तनु ।
भुज बिसाल, मूरति कराल, कालहुको काल जनु ।।
गहन-दहन-निरदहन-लंक निःसंक, बंक भुव ।
जातुधान-बलवान-मान-मद-दवन पवनसुव ।।
कह तुलसिदास सेवत सुलभ, सेवक हित संतत निकट ।
गुन गनत, नमत, सुमिरत, जपत समन सकल-संकट-बिकट।।१।।

भावार्थ- जिनके शरीरका रंग उदयकालके सूर्यके समान है, जो समुद्र लाँघकर श्रीजानकीजीके शोकको हरनेवाले, आजानुबाहु, डरावनी सूरतवाले और मानो कालके भी काल हैं। लङ्कारूपी गम्भीर वनको जो जलानेयोग्य नहीं था, उसे जिन्होंने निःशंक

जलाया और जो टेढ़ी भौंहोंवाले तथा बलवान् राक्षसोंके मान और गर्वका नाश करनेवाले हैं, तुलसीदासजी कहते हैं—वे श्रीपवन-कुमार सेवा करनेपर बड़ी सुगमतासे प्राप्त होनेवाले, अपने सेवकोंकी भलाई करनेके लिये सदा समीप रहनेवाले तथा गुण गाने, प्रणाम करने एवं स्मरण और नाम जपनेसे सब भयानक संकटोंको नाश करनेवाले हैं ॥ १ ॥

स्वर्न-सैल-संकास कोटि-रबि-तरुन-तेज-घन ।
उर बिसाल, भुजदंड चंड नख बज्र बज्रतन ॥
पिंग नयन, भृकुटी कराल रसना दसनानन ।
कपिस केस, करकस लँगूर, खल-दल-बल-भानन ॥
कह तुलसिदास बस जासु उर मारुतसुत मूरति बिकट ।
संताप पाप तेहि पुरुष पहिं सपनेहुँ नहिं आवत निकट ॥ २ ॥

भावार्थ—वे सुवर्णपर्वत (सुमेरु) के समान शरीरवाले, करोड़ों मध्याह्नके सूर्यके सदृश अनन्त तेजोराशि, विशालहृदय, अत्यन्त बलवान् भुजाओंवाले तथा वज्रके तुल्य नख और शरीर-वाले हैं। उनके नेत्र पीले हैं; भौंह, जीभ, दाँत और मुख विकराल हैं, बाल भूरे रंगके तथा पूँछ कठोर और दुष्टोंके दलके बलका नाश करनेवाली है। तुलसीदासजी कहते हैं—श्रीपवनकुमारकी डरावनी मूर्ति जिसके हृदयमें निवास करती है, उस पुरुषके समीप दुःख और पाप स्वप्नमें भी नहीं आते ॥ २ ॥

झूलना

पंचमुख-छमुख-भृगुमुख्य-भट-असुर-सुर,
सर्व-सरि-समर-समरत्थ-सूरो ।

बाँकुरो बीर बिरुदैत बिरुदावली,
वेद बंदी बदत पैजपूरो ॥
जासु गुनगाथ रघुनाथ कह, जासु बल
बिपुल-जल-भरित जग-जलधि झूरो ।
दुवन-दल-दमनको कौन तुलसीस है,
पवनको पूत रजपूत रूरो ॥ ३ ॥

भावार्थ—शिव, स्वामिकार्त्तिक, परशुराम, दैत्य और देवतावृन्द सबके युद्धरूपी नदीसे पार जानेमें योग्य योद्धा हैं। वेदरूपी वन्दीजन कहते हैं आप पूरी प्रतिज्ञावाले, चतुर योद्धा, बड़े कीर्तिमान् और यशस्वी हैं। जिनके गुणोंकी कथाको रघुनाथजीने श्रीमुखसे कहा तथा जिनके अतिशय पराक्रमसे अपार जलसे भरा हुआ संसारसमुद्र सूख गया! तुलसीके स्वामी सुन्दर राजपूत (पवनकुमार) के विना राक्षसोंके दलका नाश करनेवाला दूसरा कौन है? (कोई नहीं) ॥ ३ ॥

घनाक्षरी

भानुसों पढ़न हनुमान गये भानु मन-
अनुमानि सिसुकेलि कियो फेरफार सो ।
पाछिले पगनि गम गगन मगन-मन,
क्रमको न भ्रम, कपि बालक-बिहार सो ॥
कौतुक बिलोकि लोकपाल हरि हर बिधि,
लोचननि चकाचौंधी चित्तनि खभार सो ।

बल कैधौं बीररस, धीरज कै, साहस कै,

तुलसी सरीर धरे सबनिको सार सो ॥ ४ ॥

भावार्थ—सूर्यभगवान्‌के समीपमें हनूमान्‌जी विद्या पढ़नेके लिये गये, सूर्यदेवने मनमें बालकोंका खेल समझकर बहाना किया (कि मैं स्थिर नहीं रह सकता और बिना आमने-सामनेके पढ़ना-पढ़ाना असम्भव है) । हनूमान्‌जीने भास्करकी ओर मुख करके पीठकी तरफ पैरोंसे प्रसन्नमन आकाशमार्गमें बालकोंके खेलके समान गमन किया और उससे पाठ्य-क्रममें किसी प्रकारका भ्रम नहीं हुआ । इस अचरजके खेलको देखकर इन्द्रादि लोकपाल, विष्णु, रुद्र और ब्रह्माकी आँखें चौंधिया गयीं तथा चित्तमें खलबली-सी उत्पन्न हो गयी । तुलसीदासजी कहते हैं—सब सोचने लगे कि यह न जाने बल, न जाने वीररस, न जाने धैर्य, न जाने हिम्मत अथवा न जाने इन सबका सार ही शरीर धारण किये है ? ॥ ४ ॥

भारतमें पारथके रथकेतु कपिराज,

गाज्यो सुनि कुरुराज दल हलबल भो ।

कह्यो द्रोन भीषम समीरसुत महाबीर,

बीर-रस-बारि-निधि जाको बल जल भो ॥

बानर सुभाय बालकेलि भूमि भानु लागि,

फलँग फलाँगहूतें घाटि नभतल भो ।

नाइ-नाइ माथ जोरि-जोरि हाथ जोधा जोहैं,

हनुमान देखे जगजीवनको फल भो ॥ ५ ॥

भावार्थ—महाभारतमें अर्जुनके रथकी पताकापर कपिराज हनुमान्‌जीने गर्जन किया, जिसको सुनकर दुर्योधनकी सेनामें घबराहट उत्पन्न हो गयी। द्रोणाचार्य और भीष्मपितामहने कहा कि ये महाबली पवनकुमार हैं, जिनका बल वीररसरूपी समुद्रका जल हुआ है। इनके स्वाभाविक ही बालकोंके खेलके समान धरतीसे सूर्यतकके कुदानने आकाश-मण्डलको एक पगसे भी कम कर दिया था। सब योद्धागण मस्तक नवा-नवाकर और हाथ जोड़-जोड़कर देखते हैं। इस प्रकार हनुमान्‌जीका दर्शन पानेसे उन्हें संसारमें जीनेका फल मिल गया ॥ ५ ॥

गोपद पयोधि करि, होलिका ज्यों लाई लंक,
निपट निसंक परपुर गलबल भो।
द्रोन-सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर,
कंदुक-ज्यों कपिखेल बेल कैसो फल भो ॥
संकटसमाज असमंजस भो रामराज,
काज जुग-पूगनिको करतल पल भो।
साहसी समत्थ तुलसीको नाह जाकी बाँह,
लोकपाल पालनको फिर थिर थल भो ॥ ६ ॥

भावार्थ—समुद्रको गोखुरके समान करके निडर होकर लङ्का-जैसी (सुरक्षित नगरीको) होलिकाके सदृश जला डाला, जिससे पराये (शत्रुके) पुरमें गड़बड़ी मच गयी। द्रोण-जैसा

भारी पर्वत खेलमें ही उखाड़ गेंदकी तरह उठा लिया, वह कपिराजके लिये बेल-फलके समान क्रीड़ाकी सामग्री बन गया। राम-राज्यमें अपार सङ्कट (लक्ष्मण-शक्ति) से असमञ्जस उत्पन्न हुआ (उस समय जिसके पराक्रमसे) युगसमूहमें होनेवाला काम पलभरमें मुट्ठीमें आ गया। तुलसीके स्वामी बड़े साहसी और सामर्थ्यवान् हैं, जिनकी भुजाएँ लोकपालोंको पालन करने तथा उन्हें फिरसे स्थिरतापूर्वक बसानेका स्थान हुईं ॥ ६ ॥

कमठकी पीठि जाके गोड़निकी गाड़ैं मानो
नापके भाजन भरि जलनिधि-जल भो।
जातुधान-दावन परावनको दुर्ग भयो,
महामीनबास तिमि तोमनिको थल भो ॥
कुंभकर्न-रावन-पयोदनाद-ईंधनको
तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो।
भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान-
सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो ॥ ७ ॥

भावार्थ—कच्छपकी पीठमें जिनके पाँवके गड्ढे समुद्रका जल भरनेके लिये मानो नापके पात्र (बर्तन) हुए। राक्षसोंका नाश करते समय वह (समुद्र) ही उनके भागकर छिपनेका गढ़ हुआ तथा वही बहुत-से बड़े-बड़े मत्स्योंके रहनेका स्थान हुआ। तुलसीदासजी कहते हैं—रावण, कुम्भकर्ण और मेघनादरूपी ईंधनको जलानेके निमित्त जिनका प्रताप प्रचण्ड अग्नि हुआ।

भीष्मपितामह कहते हैं—मेरी समझमें हनूमान्‌जीके समान अत्यन्त बलवान् तीनों काल और तीनों लोकमें कोई नहीं हुआ ॥७॥

दूत रामरायको, सपूत पूत पौनको, तू
अंजनीको नंदन प्रताप भूरि भानु सो।
सीय-सोच-समन दुरित-दोष-दमन,
सरन आये अवन, लखनप्रिय प्रान सो॥
दसमुख दुसह दरिद्र दरिबेको भयो,
प्रगट तिलोक ओक तुलसी निधान सो।
ज्ञान-गुनवान बलवान सेवा सावधान,
साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो॥ ८॥

भावार्थ—आप राजा रामचन्द्रजीके दूत, पवनदेवके सुयोग्य पुत्र, अञ्जनीदेवीको आनन्द देनेवाले, असंख्यों सूर्यके समान तेजस्वी, सीताजीके शोकनाशक, पाप तथा अवगुणके नष्ट करनेवाले, शरणागतोंकी रक्षा करनेवाले और लक्ष्मणजीको प्राणोंके समान प्रिय हैं। तुलसीदासके दुस्सह दरिद्ररूपी रावणका नाश करनेके लिये आप तीनों लोकोंमें आश्रयरूप प्रकट हुए हैं। अरे लोगो! तुम ज्ञानी, गुणवान्, बलवान् और सेवा (दूसरोंको आराम पहुँचाने) में सजग हनूमान्‌जीके समान चतुर स्वामीको अपने हृदयमें बसाओ ॥ ८ ॥

दवन-दुवन-दल भुवन-विदित बल,
बेद जस गावत बिबुधबंदीछोर को।

पाप-ताप-तिमिर-तुहिन-विघटन-पटु,

सेवक-सरोरुह सुखद भानु भोरको ॥

लोक-परलोकतें बिसोक सपने न सोक,

तुलसीके हिये है भरोसो एक ओरको ।

रामको दुलारो दास बामदेवको निवास,

नाम कलि-कामतरु केसरी-किसोरको ॥ ९ ॥

भावार्थ—दानवोंकी सेनाको नष्ट करनेमें जिनका पराक्रम विश्व-विख्यात है, वेद यश-गान करते हैं कि देवताओंको कारागारसे छुड़ानेवाला पवनकुमारके सिवा दूसरा कौन है ? आप पापान्धकार और कष्टरूपी पालेको घटानेमें प्रवीण तथा सेवक-रूपी कमलको प्रसन्न करनेके लिये प्रातःकालके सूर्यके समान हैं । तुलसीके हृदयमें एकमात्र हनूमान्‌जीका भरोसा है, स्वप्नमें भी लोक और परलोककी चिन्ता नहीं, शोकरहित है । रामचन्द्रजीके दुलारे, शिव-स्वरूप (ग्यारह रुद्रमें एक) केशरीनन्दनका नाम कलिकालमें कल्पवृक्षके समान है ॥ ९ ॥

महाबल-सीम, महाभीम, महाबानइत,

महाबीर बिदित बरायो रघुबीरको ।

कुलिस-कठोरतनु जोरपरै रोर रन,

करुना-कलित मन धारमिक धीरको ॥

दुर्जनको कालसो कराल पाल सज्जनको,
सुमिरे हरनहार तुलसीकी पीरको।
सीय-सुख-दायक दुलारो रघुनायकको,
सेवक सहायक है साहसी समीरको ॥ १० ॥

भावार्थ—आप अत्यन्त पराक्रमकी हद, अतिशय कराल, बड़े बहादुर और रघुनाथजीद्वारा चुने हुए महाबलवान् विख्यात योद्धा हैं। वज्रके समान कठोर शरीरवाले जिनके जोर पकड़ने अर्थात् बल करनेसे रणस्थलमें कोलाहल मच जाता है, सुन्दर करुणा एवं धैर्यके स्थान और मनसे धर्माचरण करनेवाले हैं। दुष्टोंके लिये कालके समान भयावने, सज्जनोंको पालनेवाले और स्मरण करनेसे तुलसीके दुःखको हरनेवाले हैं। सीताजीको सुख देनेवाले, रघुनाथजीके दुलारे और सेवकोंकी सहायता करनेमें पवनकुमार बड़े ही साहसी (हिम्मतवर) हैं ॥ १० ॥

रचिबेको बिधि जैसे पालिबेको हरि, हर
मीच मारिबेको ज्याइबेको सुधापान भो।
धरिबेको धरनि, तरनि तम दलिबेको,
सोखिबे कृसानु, पोषिबेको हिम-भानु भो ॥
खल-दुख-दोषिबेको, जन-परितोषिबेको,
माँगिबो मलीनताको मोदक सुदान भो।

आरतकी आरति निवारिबेको तिहूँ पुर,
तुलसीको साहेब हठीलो हनुमान भो ॥११॥

भावार्थ—आप सृष्टिरचनाके लिये ब्रह्मा, पालन करनेको विष्णु, मारनेको रुद्र और जिलानेके लिये अमृतपानके समान हुए; धारण करनेमें धरती, अन्धकारको नसानेमें सूर्य, सुखानेमें अग्नि, पोषण करनेमें चन्द्रमा और सूर्य हुए; खलोंको दुःख देने और दूषित बनानेवाले, सेवकोंको सन्तुष्ट करनेवाले एवं माँगनारूपी मैलेपनका विनाश करनेमें मोदकदाता हुए। तीनों लोकोंमें दुखियोंके दुःख छुड़ानेके लिये तुलसीके स्वामी श्रीहनूमान्‌जी दृढ़प्रतिज्ञ हुए हैं ॥ ११ ॥

सेवक स्योकाई जानि जानकीस मानै कानि,
सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नाँकको।
देवी देव दानव दयावने ह्वै जोरैं हाथ,
बापुरे बराक कहा और राजा राँकको ॥
जागत सोवत बैठे बागत बिनोद मोद,
ताकै जो अनर्थ सो समर्थ एक आँकको।
सब दिन रूरो परै पूरो जहाँ तहाँ ताहि,
जाके है भरोसो हिये हनुमान हाँकको ॥ १२ ॥

भावार्थ—सेवक हनूमान्‌जीकी सेवा समझकर जानकीनाथने संकोच माना अर्थात् एहसानसे दब गये, शिवजी पक्षमें रहते

और स्वर्गके स्वामी इन्द्र नवते हैं। देवी-देवता, दानव सब दयाके पात्र बनकर हाथ जोड़ते हैं, फिर दूसरे बेचारे दरिद्र-दुखिया राजा कौन चीज हैं। जागते, सोते, बैठते, डोलते, क्रीडा करते और आनन्दमें मग्न (पवनकुमारके) सेवकका अनिष्ट चाहेगा ऐसा कौन सिद्धान्तका समर्थ है? उसका जहाँ-तहाँ सब दिन श्रेष्ठ रीतिसे पूरा पड़ेगा जिसके हृदयमें अञ्जनी-कुमारकी हाँकका भरोसा है ॥१२॥

सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि,
लोकपाल सकल लखन राम जानकी।
लोक परलोकको बिसोक सो तिलोक ताहि,
तुलसी तमाइ कहा काहू बीर बानकी॥
केसरीकिसोर बंदीछोरके नेवाजे सब,
कीरति बिमल कपि करुनानिधानकी।
बालक ज्यों पालिहैं कृपालु मुनि सिद्ध ताको,
जाके हिये हुलसति हाँक हनुमानकी॥१३॥

भावार्थ—जिसके हृदयमें हनूमान्‌जीकी हाँक उल्लसित होती है उसपर अपने सेवकों और पार्वतीजीके सहित शङ्करभगवान्, समस्त लोकपाल, श्रीरामचन्द्र, जानकी और लक्ष्मणजी भी प्रसन्न रहते हैं। तुलसीदासजी कहते हैं—फिर लोक और परलोकमें शोकरहित हुए उस प्राणीको तीनों लोकोंमें किसी योद्धाके आश्रित होनेकी क्या लालसा होगी? दयानिकेत केशरी-

नन्दन निर्मल कीर्तिवाले हनूमान्‌जीके प्रसन्न होनेसे सम्पूर्ण सिद्ध-मुनि उस मनुष्यपर दयालु होकर बालकके समान पालन करते हैं; उन करुणानिधान कपीश्वरकी कीर्ति ऐसी ही निर्मल है।१३।

करुनानिधान, बलबुद्धिके निधान, मोद
महिमानिधान, गुन-ज्ञानके निधान हौ।
बामदेव-रूप, भूप रामके सनेही, नाम
लेत देत अर्थ धर्म काम निरबान हौ॥
आपने प्रभाव, सीतानाथके सुभाव सील,
लोक-बेद-बिधिके बिदुष हनुमान हौ।
मनकी, बचनकी, करमकी तिहूँ प्रकार,
तुलसी तिहारो तुम साहेब सुजान हौ॥१४॥

भावार्थ—तुम दयाके स्थान, बुद्धि-बलके धाम, आनन्दमहिमाके मन्दिर और गुण-ज्ञानके निकेतन हो; राजा रामचन्द्रके स्नेही, शंकरजीके रूप और नाम लेनेसे अर्थ, धर्म, काम, मोक्षके देनेवाले हो। हे हनूमान्‌जी! आप अपनी शक्तिसे श्रीरघुनाथजीके शील-स्वभाव, लोक-रीति और वेद-विधिके पण्डित हो। मन, वचन, कर्म तीनों प्रकारसे तुलसी आपका दास है, आप चतुर स्वामी हैं अर्थात् भीतर-बाहरकी सब जानते हैं॥ १४॥

मनको अगम, तन सुगम किये कपीस,
काज महाराजके समाज साज साजे हैं।

देव-बंदीछोर रनरोर केसरीकिसोर,
जुग जुग जग तेरे बिरद बिराजे हैं॥
बीर बरजोर, घटि जोर तुलसीकी ओर,
सुनि सकुचाने साधु, खलगन गाजे हैं।
बिगरी सँवार अंजनीकुमार कीजै मोहिं,
जैसे होत आये हनुमानके निवाजे हैं॥१५॥

भावार्थ—हे कपिराज! महाराज रामचन्द्रजीके कार्यके लिये सारा साज-समाज सजकर जो काम मनको दुर्गम था उसको आपने शरीरसे करके सुलभ कर दिया। हे केशरीकिशोर! आप देवताओंको वन्दीखानेसे मुक्त करनेवाले, संग्रामभूमिमें कोलाहल मचानेवाले हैं और आपकी नामवरी युग-युगसे संसारमें विराजती है। हे ज़बर्दस्त योद्धा! आपका बल तुलसीके लिये क्यों घट गया है, जिसको सुनकर साधु सकुचा गये हैं और दुष्टगण प्रसन्न हो रहे हैं। हे अञ्जनीकुमार! मेरी बिगड़ी बात उसी तरह सुधारिये जिस प्रकार आपके प्रसन्न होनेसे होती (सुधरती) आयी है॥ १५॥

सवैया

जानसिरोमनि हौ हनुमान सदा जनके मन बास तिहारो।
ढारो बिगारो मैं काको कहा केहि कारन खीझत हौं तो तिहारो॥
साहेब-सेवक नाते ते हातो कियो सो तहाँ तुलसीको न चारो।
दोष सुनाये तें आगेहुँको होसियार ह्वै हौं मन तौ हिय हारो॥१६॥

भावार्थ–हे हनूमान्जी! आप ज्ञानशिरोमणि हैं और सेवकोंके मनमें आपका सदा निवास है। मैं किसीका क्या गिराता वा बिगाड़ता हूँ। फिर आप किस कारण अप्रसन्न हैं, मैं तो आपका दास हूँ। हे स्वामी! आपने मुझे सेवकके नातेसे च्युत कर दिया, इसमें तुलसीका कोई वश नहीं है। यद्यपि मन हृदयमें हार गया है तो भी मेरा अपराध सुना दीजिये जिसमें आगेके लिये होशियार हो जाऊँ॥ १६॥

तेरे थपे उथपै न महेस, थपै थिर को कपि जे घर घाले।
तेरे निवाजे गरीबनिवाज विराजत बैरिनके उर साले॥
संकट सोच सबै तुलसी लिये नाम फटै मकरीके-से जाले।
बूढ़ भये, बलि, मेरिहि बार, कि हारि परे बहुतै नत-पाले॥१७॥

भावार्थ–हे वानरराज! आपके बसाये हुएको शंकरभगवान् भी नहीं उजाड़ सकते और जिस घरको आपने नष्ट कर दिया उसको कौन बसा सकता है? हे गरीबनिवाज! आप जिसपर प्रसन्न हुए वे शत्रुओंके हृदयमें पीड़ारूप होकर विराजते हैं। तुलसीदासजी कहते हैं, आपका नाम लेनेसे सम्पूर्ण संकट और सोच मकड़ीके जालेके समान फट जाते हैं। बलिहारी! क्या आप मेरी ही बार बूढ़े हो गये अथवा बहुत-से गरीबोंका पालन करते-करते अब थक गये हैं? (इसीसे मेरा संकट दूर करनेमें ढील कर रहे हैं)॥ १७॥

सिंधु तरे, बड़े बीर दले खल, जारे हैं लंकसे बंक मवासे।
तैं रन-केहरि केहरिके बिदले अरि-कुंजर छैल छवा से॥

तोसों समत्थ सुसाहेब सेइ सहै तुलसी दुख-दोष दवा से ।
बानर-बाज ! बढ़े खल-खेचर, लीजत क्यों न लपेटि लवासे॥१८॥

भावार्थ—आपने समुद्र लाँघकर बड़े-बड़े दुष्ट राक्षसोंका विनाश करके लंका-जैसे विकट गढ़को जलाया । हे संग्रामरूपी वनके सिंह ! राक्षस शत्रु बने-ठने हाथीके बच्चेके समान थे, आपने उनको सिंहकी भाँति विनष्ट कर डाला । आपके बराबर समर्थ और अच्छे स्वामीकी सेवा करते हुए तुलसी दोष और दुःखकी आगको सहन करे (यह आश्चर्यकी बात है)। हे वानररूपी बाज ! बहुत-से दुष्टजनरूपी पक्षी बढ़ गये हैं, उनको आप बटेरके समान क्यों नहीं लपेट लेते ?॥ १८ ॥

अच्छ-विमर्दन कानन-भानि दसानन आनन भा न निहारो ।
बारिदनाद अकंपन कुंभकरन्न-से कुंजर केहरि-बारो ॥
राम-प्रताप-हुतासन, कच्छ, विपच्छ, समीर समीरदुलारो ।
पापतें, सापतें, ताप तिहूँतें सदा तुलसी कहँ सो रखवारो ॥१९॥

भावार्थ—हे अक्षकुमारको मारनेवाले हनूमान्‌जी ! आपने अशोकवाटिकाको विध्वंस किया और रावण-जैसे प्रतापी योद्धाके मुखके तेजकी ओर देखातक नहीं अर्थात् उसकी कुछ भी परवा नहीं की । आप मेघनाद, अकम्पन और कुम्भकर्ण-सरीखे हाथियोंके मदको चूर्ण करनेमें किशोरावस्थाके सिंह हैं । विपक्षरूप तिनकोंके ढेरके लिये भगवान् रामका प्रताप अग्नितुल्य है और पवनकुमार उसके लिये पवनरूप हैं । वे पवननन्दन ही तुलसीदासको सर्वदा पाप, शाप और सन्ताप तीनोंसे बचानेवाले हैं ॥ १९ ॥

घनाक्षरी

जानत जहान हनुमानको निवाज्यौ जन,
मन अनुमानि, बलि, बोल न बिसारिये।
सेवा-जोग तुलसी कबहुँ कहा चूक परी,
साहेब सुभाव कपि साहिबी सँभारिये॥
अपराधी जानि कीजै सासति सहस भाँति,
मोदक मरै जो, ताहि माहुर न मारिये।
साहसी समीरके दुलारे रघुबीरजूके,
बाँह पीर महाबीर बेगि ही निवारिये॥२०॥

भावार्थ—हे हनूमान्‌जी! बलि जाता हूँ, अपनी प्रतिज्ञाको न भुलाइये, जिसको संसार जानता है, मनमें विचारिये। आपका कृपापात्र जन बाधारहित और सदा प्रसन्न रहता है। हे स्वामी कपिराज! तुलसी कभी सेवाके योग्य था? क्या चूक हुई है अपनी साहिबीको सम्हालिये। मुझे अपराधी समझते हों तो सहस्रों भाँतिकी दुर्दशा कीजिये किन्तु जो लड्डू देनेसे मरता हो उसको विषसे न मारिये। हे महाबली, साहसी, पवनके दुलारे, रघुनाथ-जीके प्यारे! भुजाओंकी पीड़ाको शीघ्र ही दूर कीजिये॥ २०॥

बालक बिलोकि, बलि, बारेतें आपनो कियो,
दीनबंधु दया कीन्हीं निरुपाधि न्यारिये।
रावरो भरोसो तुलसीके, रावरोई बल,
आस रावरीयै, दास रावरो बिचारिये॥

बड़ो बिकराल कलि, काको न बिहाल कियो,
माथे पगु बलीको, निहारि सो निवारिये ।
केसरीकिसोर, रनरोर, बरजोर बीर,
बाँहुपीर राहुमातु ज्यौं पछारि मारिये ॥२१॥

भावार्थ—हे दीनबन्धु ! बलि जाता हूँ, बालकको देखकर आपने लड़कपनसे ही अपनाया और मायारहित अनोखी दया की। सोचिये तो सही, तुलसी आपका दास है, इसको आपका भरोसा, आपका ही बल और आपकी ही आशा है। अत्यन्त भयानक कलिकालने किसको बेचैन नहीं किया, इस बलवान्‌का पैर मेरे मस्तकपर भी देखकर उसको हटाइये। हे केशरीकिशोर बरजोर वीर ! आप रणमें कोलाहल उत्पन्न करनेवाले हैं, राहुकी माता सिंहिकाके समान बाहुकी पीड़ाको पछाड़कर मार डालिये ॥२१॥

उथपे थपनथिर थपे उथपनहार,
केसरीकुमार बल आपनो सँभारिये ।
रामके गुलामनिको कामतरु रामदूत,
मोसे दीन दूबरेको तकिया तिहारिये ॥
साहेब समर्थ तोसों तुलसीके माथेपर,
सोऊ अपराध बिनु बीर, बाँधि मारिये ।
पोखरी बिसाल बाँहु, बलि बारिचर पीर,
मकरी ज्यौं पकरिकै बदन बिदारिये ॥२२॥

भावार्थ—हे केशरीकुमार ! आप उजड़े हुए (सुग्रीव-विभीषण) को बसानेवाले और बसे हुए (रावणादि) को उजाड़नेवाले हैं,

अपने उस बलका स्मरण कीजिये। हे रामदूत! रामचन्द्रजीके सेवकोंके लिये आप कल्पवृक्ष हैं और मुझ-सरीखे दीन-दुर्बलको आपका ही सहारा है। हे वीर! तुलसीके माथेपर आपके समान समर्थ स्वामी विद्यमान रहते हुए भी वह बाँधकर मारा जाता है। बलि जाता हूँ; मेरी भुजा विशाल पोखरीके समान है और यह पीड़ा उसमें जलचरके सदृश है, सो आप मकरीके समान इस जलचरीको पकड़कर इसका मुख फाड़ डालिये ॥ २२ ॥

रामको सनेह, राम साहस, लखन सिय
रामकी भगति, सोच संकट निवारिये।
मुद-मरकट रोग-बारिनिधि हेरि हारे
जीव-जामवंतको भरोसो तेरो भारिये॥
कूदिये कृपाल तुलसी सुप्रेम-पब्बयतें,
सुथल सुबेल भालु बैठिकै बिचारिये।
महाबीर बाँकुरे बराकी बाँहपीर क्यों न,
लंकिनी ज्यों लातघात ही मरोरि मारिये॥२३॥

भावार्थ—मुझमें रामचन्द्रजीके प्रति स्नेह, रामचन्द्रजीकी भक्ति, राम, लक्ष्मण और जानकीजीकी कृपासे साहस (दृढ़तापूर्वक कठिनाइयोंका सामना करनेकी हिम्मत) है, अतः मेरे शोक-संकटको दूर कीजिये। आनन्दरूपी बंदर रोगरूपी अपार समुद्रको देखकर मनमें हार गये हैं, जीवरूपी जामवन्तको आपका बड़ा भरोसा है। हे कृपालु! तुलसीके सुन्दर प्रेमरूपी पर्वतसे कूदिये,

श्रेष्ठ स्थान (हृदय) रूपी सुवेलपर्वतपर बैठे हुए जीवरूपी जामवन्तजी सोचते (प्रतीक्षा करते) हैं। हे महाबली बाँके योद्धा ! मेरे बाहुकी पीड़ारूपिणी लङ्किनीको लातकी चोटसे क्यों नहीं मरोड़कर मार डालते ? ॥ २३ ॥

लोक परलोकहूँ तिलोक न विलोकियत,
तोसे समरथ चष चारिहूँ निहारिये ।
कर्म, काल, लोकपाल, अग जग जीवजाल,
नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिये ॥
खास दास रावरो, निवास तेरो तासु उर,
तुलसी सो, देव दुखी देखिअत भारिये ।
बात तरुमूल, बाँहुसूल कपिकच्छु-बेलि,
उपजी सकेलि कपिकेलि ही उखारिये ॥२४॥

भावार्थ—लोक, परलोक और तीनों लोकोंमें चारों नेत्रोंसे देखता हूँ, आपके समान योग्य कोई नहीं दिखायी देता । हे नाथ ! कर्म, काल, लोकपाल तथा सम्पूर्ण स्थावर-जङ्गम जीवसमूह आपके ही हाथमें हैं, अपनी महिमाको विचारिये । हे देव ! तुलसी आपका निजी सेवक है, उसके हृदयमें आपका निवास है और वह भारी दुखी दिखायी देता है । वातव्याधिजनित बाहुकी पीड़ा केवाँचकी लताके समान है, उसकी उत्पन्न हुई जड़को बटोरकर वानरी खेलसे उखाड़ डालिये ॥ २४ ॥

करम-कराल-कंस भूमिपालके भरोसे,
बकी बकभगिनी काहूतें कहा डरैगी ।

बड़ी बिकराल बालघातिनी न जात कहि,
बाँहुबल बालक छबीले छोटे छरैगी ॥
आई है बनाइ बेष आप ही बिचारि देख,
पाप जाय सबको गुनीके पाले परैगी ।
पूतना पिसाचिनी ज्यौं कपिकान्ह तुलसीकी,
बाँह-पीर महाबीर, तेरे मारे मरैगी ॥२५॥

भावार्थ—कर्मरूपी भयङ्कर कंसराजाके भरोसे बकासुरकी बहिन पूतना राक्षसी क्या किसीसे डरेगी ? बालकोंको मारनेमें बड़ी भयावनी, जिसकी लीला कही नहीं जाती है, वह अपने बाहुबलसे छोटे छविमान् शिशुओंको छलेगी । आप ही विचारकर देखिये, वह सुन्दर रूप बनाकर आयी है, यदि आप-सरीखे गुणीके पाले पड़ेगी तो सभीका पाप दूर हो जायगा । हे महाबली कपिराज ! तुलसीकी बाहुकी पीड़ा पूतना पिशाचिनीके समान है और आप बालकृष्णरूप हैं, यह आपके ही मारनेसे मरेगी ॥ २५ ॥

भालकी कि कालकी कि रोषकी त्रिदोषकी है,
बेदन बिषम पाप ताप छलछाँहकी ।
करमन कूटकी कि जंत्रमंत्र बूटकी,
पराहि जाहि पापिनी मलीन मनमाँहकी ॥
पैहहि सजाय, नत कहत बजाय तोहि,
बावरी न होहि बानि जानि कपिनाँहकी ।

आन हनुमानकी दोहाई बलवानकी,
सपथ महावीरकी जो रहै पीर बाँहकी ॥ २६ ॥

भावार्थ—यह कठिन पीड़ा कपालकी लिखावट है या समय, क्रोध अथवा त्रिदोषका या मेरे भयङ्कर पापोंका परिणाम है, दुःख किंवा धोखेकी छाया है। मारणादि प्रयोग अथवा यन्त्र-मन्त्ररूपी वृक्षका फल है, अरी मनकी मैली पापिनी पूतना! भाग जा नहीं तो मैं डङ्का पीटकर कहे देता हूँ कि कपिराजका स्वभाव जानकर तू पगली न बने। जो बाहुकी पीड़ा रहे तो मैं महावीर बलवान् हनूमान्‌जीकी दोहाई और सौगंद करता हूँ अर्थात् अब वह नहीं रह सकती ॥ २६ ॥

सिंहिका सँहारि बल, सुरसा सुधारि छल,
लंकिनी पछारि मारि वाटिका उजारी है।
लंक परजारि मकरी बिदारि वार-वार,
जातुधान धारि धूरिधानी करि डारी है॥
तोरि जमकातरि मदोदरी कढ़ोरि आनी,
रावनकी रानी मेघनाद महँतारी है।
भीर बाँहपीरकी निपट राखी महावीर,
कौनके सकोच तुलसीके सोच भारी है ॥२७॥

भावार्थ—सिंहिकाके बलका संहार करके सुरसाके छलको सुधारकर लंकिनीको मार गिराया और अशोकवाटिकाको उजाड़ डाली। लंकापुरीको अच्छी तरहसे जलाकर मकरीको विदीर्ण करके बारम्बार राक्षसोंकी सेनाका विनाश किया। यमराजका

खड्ग अर्थात् परदा फाड़कर मेघनादकी माता और रावणकी पटरानी मन्दोदरीको राजमहलसे बाहर निकाल लाये। हे महाबली कपिराज! तुलसीको बड़ा सोच है, किसके संकोचमें पड़कर आपने केवल मेरे बाहुकी पीड़ाके भयको छोड़ रक्खा है॥ २७॥

तेरो बालकेलि बीर सुनि सहमत धीर,
भूलत सरीरसुधि सक्र-रवि-राहुकी।
तेरी बाँह बसत बिसोक लोकपाल सब,
तेरो नाम लेत रहै आरति न काहुकी॥
साम दान भेद बिधि, बेदहू लबेद सिधि,
हाथ कपिनाथहीके चोटी चोर साहुकी।
आलस अनख परिहासकै सिखावन है,
एते दिन रही पीर तुलसीके बाहुकी॥२८॥

भावार्थ—हे वीर! आपके लड़कपनका खेल सुनकर धीरजवान् भी भयभीत हो जाते हैं और इन्द्र, सूर्य तथा राहुको अपने शरीरकी सुध भुला जाती है। आपके बाहुबलसे सब लोकपाल शोकरहित होकर बसते हैं और आपका नाम लेनेसे किसीका दुःख नहीं रह जाता। साम, दान और भेद-नीतिका विधान तथा वेद-लवेदसे भी सिद्ध है कि चोर-साहुकी चोटी कपिनाथके ही हाथमें रहती है। तुलसीदासके जो इतने दिन बाहुकी पीड़ा रही है सो क्या आपका आलस है? अथवा क्रोध, परिहास या शिक्षा है॥२८॥

टूकनिको घर घर डोलत कँगाल बोलि,
बाल ज्यों कृपाल नतपाल पालि पोसो है।
कीन्ही है सँभार सार अंजनीकुमार बीर,
आपनो बिसारि हैं न मेरेहू भरोसो है ॥
इतनो परेखो सब भाँति समरथ आजु,
कपिराज साँची कहौं को तिलोक तोसो है।
सासति सहत दास कीजे पेखि परिहास,
चीरीको मरन खेल बालकनिको सो है ॥२९॥

भावार्थ—हे गरीबोंके पालन करनेवाले कृपानिधान! टुकड़ेके लिये दरिद्रतावश घर-घर में डोलता फिरता था, आपने बुलाकर बालकके समान मेरा पालन-पोषण किया है। हे वीर अञ्जनीकुमार! मुख्यतः आपने ही मेरी रक्षा की है, अपने जनको आप न भुलायेंगे, इसका मुझे भी भरोसा है। हे कपिराज! आज आप सब प्रकार समर्थ हैं, मैं सच कहता हूँ, आपके समान भला तीनों लोकोंमें कौन है? किन्तु मुझे इतना परेखा (पछतावा) है कि यह सेवक दुर्दशा सह रहा है, लड़कोंका खेलवाड़ होनेके समान चिड़ियाकी मृत्यु हो रही है और आप तमाशा देखते हैं ॥ २९ ॥

आपने ही पापतें त्रितापतें कि सापतें,
बढ़ी है बाँहबेदन कही न सहि जाति है।
औषध अनेक जंत्र-मंत्र-टोटकादि किये,
बादि भये देवता मनाये अधिकाति है ॥

करतार, भरतार, हरतार, कर्म, काल,
को है जगजाल जो न मानत इताति है।
चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कह्यो रामदूत,
ढील तेरी बीर मोहि पीरतें पिराति है ॥३०॥

भावार्थ—मेरे ही पाप वा तीनों ताप अथवा शापसे बाहुकी पीड़ा बढ़ी है, वह न कही जाती और न सही जाती है। अनेक ओषधि, यन्त्र-मन्त्र-टोटकादि किये, देवताओंको मनाया पर सब व्यर्थ हुआ, पीड़ा बढ़ती ही जाती है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, कर्म, काल और संसारका समूह-जाल कौन ऐसा है जो आपकी आज्ञाको न मानता हो? हे रामदूत! तुलसी आपका दास है और आपने इसको अपना सेवक कहा है। हे वीर! आपकी यह ढील मुझे इस पीड़ासे भी अधिक पीड़ित कर रही है ॥३०॥

दूत रामरायको, सपूत पूत बायको,
समत्थ हाथ पायको सहाय असहायको।
बाँकी बिरदावली बिदित बेद गाइयत,
रावन सो भट भयो मुठिकाके घायको ॥
एते बड़े साहेब समर्थको निवाजो आज,
सीदत सुसेवक बचन मन कायको।
थोरी बाँहपीरकी बड़ी गलानि तुलसीको,
कौन पाप कोप, लोप प्रगट प्रभायको ॥३१॥

भावार्थ—आप राजा रामचन्द्रके दूत, पवनदेवके सत्पुत्र, हाथ-पाँवके समर्थ और निराश्रितोंके सहायक हैं। आपके सुन्दर यशकी कथा विख्यात है, वेद गान करते हैं और रावण-जैसा त्रिलोकविजयी योधा आपके घूँसेकी चोटसे घायल हो गया। इतने बड़े योग्य स्वामीके अनुग्रह करनेपर भी आपका श्रेष्ठ सेवक आज तन-मन-वचनसे दुःख पा रहा है। तुलसीको इस थोड़ी-सी बाहु-पीड़ाकी बड़ी ग्लानि है, मेरे कौन-से पापके कारण वा क्रोध-से आपका प्रत्यक्ष प्रभाव लुप्त हो गया है? ॥ ३१ ॥

देवी देव दनुज मनुज मुनि सिद्ध नाग,
छोटे बड़े जीव जेते चेतन अचेत हैं।
पूतना पिसाची जातुधानी जातुधान बाम,
रामदूतकी रजाइ माथे मानि लेत हैं॥
घोर जंत्र मंत्र कूट कपट कुरोग जोग,
हनूमान आन सुनि छाड़त निकेत हैं।
क्रोध कीजे कर्मको प्रबोध कीजे तुलसीको,
सोध कीजे तिनको जो दोष दुख देत हैं॥३२॥

भावार्थ—देवी, देवता, दैत्य, मनुष्य, मुनि, सिद्ध और नाग आदि छोटे-बड़े जितने जड़-चेतन जीव हैं तथा पूतना, पिशाचिनी, राक्षसी-राक्षस जितने कुटिल प्राणी हैं, वे सभी रामदूत पवन-कुमारकी आज्ञा शिरोधार्य करके मानते हैं। भीषण यन्त्र-मन्त्र, धोखाधारी, छलबाज और दुष्ट रोगोंके आक्रमण हनुमान्‌जीकी

दोहाई सुनकर स्थान छोड़ देते हैं। मेरे खोटे कर्मपर क्रोध कीजिये, तुलसीको सिखावन दीजिये और जो दोष हमें दुःख देते हैं उनका सुधार करिये ॥ ३२ ॥

तेरे बल बानर जिताये रन रावनसों,
तेरे घाले जातुधान भये घर-घरके।
तेरे बल रामराज किये सब सुरकाज,
सकल समाज साज साजे रघुबरके ॥
तेरो गुनगान सुनि गीरबान पुलकत,
सजल बिलोचन बिरंचि हरि हरके।
तुलसीके माथेपर हाथ फेरो कीसनाथ,
देखिये न दास दुखी तोसे कनिगर के ॥३३॥

भावार्थ—आपके बलने युद्धमें वानरोंको रावणसे जिताया और आपके ही नष्ट करनेसे राक्षस घर-घरके (तीन-तेरह) हो गये। आपके ही बलसे राजा रामचन्द्रजीने देवताओंका सब काम पूरा किया और आपने ही रघुनाथजीके समाजका सम्पूर्ण साज सजाया। आपके गुणोंका गान सुनकर देवता रोमाञ्चित होते हैं और ब्रह्मा, विष्णु, महेशकी आँखोंमें जल भर आता है। हे वानरोंके स्वामी! तुलसीके माथेपर हाथ फेरिये, आप-जैसे अपनी मर्यादा-की लाज रखनेवालोंके दास कभी दुखी नहीं देखे गये ॥ ३३ ॥

पालो तेरे टूकको परेहू चूक मूकिये न,
कूर कौड़ी दूको हौं आपनी ओर हेरिये।

भोरानाथ भोरेही सरोष होत थोरे दोष,
पोषि तोषि थापि आपनो न अवडेरिये ॥
अंबु तू हौं अंबुचर, अंब तू हौं डिंभ, सो न,
बूझिये बिलंब अवलंब मेरे तेरिये ।
बालक बिकल जानि पाहि प्रेम पहिचानि,
तुलसीकी बाँहपर लामी लूम फेरिये ॥ ३४ ॥

भावार्थ—आपके टुकड़ोंसे पला हूँ, चूक पड़नेपर भी मौन न हो जाइये। मैं कुमार्गी दो कौड़ीका हूँ पर आप अपनी ओर देखिये। हे भोलानाथ! अपने भोलेपनसे ही आप थोड़े दोषसे रुष्ट हो जाते हैं, सन्तुष्ट होकर मेरा पालन करके मुझे बसाइये, अपना सेवक समझकर दुर्दशा न कीजिये। आप जल हैं तो मैं मछली हूँ, आप माता हैं तो मैं छोटा बालक हूँ, देरी न कीजिये, मुझको आपका ही सहारा है। बच्चेको व्याकुल जानकर प्रेमकी पहचान करके रक्षा कीजिये, तुलसीकी बाँहपर अपनी लंबी पूँछ फेरिये (जिससे पीड़ा निर्मूल हो जावे) ॥ ३४ ॥

घेरि लियो रोगनि कुजोगनि कुलोगनि ज्यौं,
बासर जलद घनघटा धुकि धाई है ।
बरषत बारि पीर जारिये जवासे जस,
रोष बिनु दोष, धूम-मूल मलिनाई है ॥
करुनानिधान हनुमान महाबलवान,
हेरि हँसि हाँकि फूँकि फौजैं तैं उड़ाई है ।

खाये हुतो तुलसी कुरोग राढ़ राकसनि,
केसरीकिसोर राखे बीर बरिआई है ॥ ३५ ॥

भावार्थ—रोगों, बुरे योगों और दुष्ट लोगोंने मुझे इस प्रकार घेर लिया है जैसे दिनमें बादलोंका घना समूह झपटकर आकाशमें दौड़ता है। पीड़ारूपी जल बरसाकर इन्होंने क्रोध करके बिना अपराध यशरूपी जवासेको अग्निकी तरह झुलसकर मूर्च्छित कर दिया है। हे दयानिधान महाबलवान् हनूमान्‌जी! आप हँसकर निहारिये और ललकारकर विपक्षीकी सेनाको अपनी फूँकसे उड़ा दीजिये। हे केशरीकिशोर वीर! तुलसीको कुरोगरूपी निर्दय राक्षसने खा लिया था, आपने जोरावरीसे मेरी रक्षा की है॥३५॥

सवैया

रामगुलाम तुही हनुमान
गोसाँइ सुसाँइ सदा अनुकूलो।
पाल्यो हौं बाल ज्यों आखर दू
पितु मातु सों मंगल मोद समूलो॥
बाँहकी बेदन बाँहपगार
पुकारत आरत आनँद भूलो।
श्रीरघुबीर निवारिये पीर
रहौं दरबार परो लटि लूलो॥३६॥

भावार्थ—हे गोस्वामी हनूमान्‌जी! आप श्रेष्ठ स्वामी और सदा श्रीरामचन्द्रजीके सेवकोंके पक्षमें रहनेवाले हैं। आनन्द

मंगलके मूल दोनों अक्षरों (रामनाम) ने माता-पिताके समान मेरा पालन किया है । हे बाहुपगार (भुजाओंका आश्रय देनेवाले)! बाहुकी पीड़ासे मैं सारा आनन्द भुलाकर दुखी होकर पुकार रहा हूँ । हे रघुकुलके वीर ! पीड़ाको दूर कीजिये जिससे दुर्बल और पंगु होकर भी आपके दरबारमें पड़ा रहूँ ॥ ३६ ॥

घनाक्षरी

कालकी करालता करम कठिनाई कीधौं,
पापके प्रभावकी सुभाय बाय बावरे ।
वेदन कुभाँति सो सही न जाति राति दिन,
सोई बाँह गही जो गही समीरडावरे ॥
लायो तरु तुलसी तिहारो सो निहारि बारि,
सींचिये मलीन भो तयो है तिहूँ तावरे ।
भूतनिकी आपनी परायेकी कृपानिधान,
जानियत सबहीकी रीति राम रावरे ॥३७॥

भावार्थ—न जाने कालकी भयानकता है, कर्मोंकी कठिनता है, पापका प्रभाव है अथवा स्वाभाविक बातकी उन्मत्तता है । रात-दिन बुरी तरहकी पीड़ा हो रही है, जो सही नहीं जाती और उसी बाँहको पकड़े हुए हैं जिसको पवनकुमारने पकड़ा था । तुलसीरूपी वृक्ष आपका ही लगाया हुआ है । वह तीनों तापोंकी ज्वालासे झुलसकर मुरझा गया है, इसकी ओर

निहारकर कृपारूपी जलसे सींचिये। हे दयानिधान रामचन्द्रजी! आप भूतोंकी, अपनी और विरानेकी सबकी रीति जानते हैं ॥३७॥

पाँयपीर पेटपीर बाँहपीर मुँहपीर,
जरजर सकल सरीर पीरमई है।
देव भूत पितर करम खल काल ग्रह,
मोहिपर दवरि दमानक सी दई है॥
हौं तो बिन मोलके बिकानो बलि बारेहीतें,
ओट रामनामकी ललाट लिखि लई है।
कुंभजके किंकर बिकल बूड़े गोखुरनि,
हाय रामराय ऐसी हाल कहूँ भई है ॥३८॥

भावार्थ—पाँवकी पीड़ा, पेटकी पीड़ा, बाहुकी पीड़ा और मुखकी पीड़ा—सारा शरीर पीड़ामय होकर जीर्ण-शीर्ण हो गया है। देवता, प्रेत, पितर, कर्म, काल और दुष्ट ग्रह सब साथ ही दौरा करके मुझपर तोपोंकी बाढ़-सी दे रहे हैं। बलि जाता हूँ, मैं तो लड़कपनसे ही आपके हाथ बिना मोल बिका हुआ हूँ और अपने कपालमें रामनामका आधार लिख लिया है। हाय राजा रामचन्द्रजी! कहीं ऐसी दशा भी हुई है कि अगस्त्यमुनिका सेवक गायके खुरमें डूब गया हो ॥ ३८ ॥

बाहुक-सुबाहु नीच लीचर-मरीच मिलि,
मुँहपीर-केतुजा कुरोग जातुधान हैं।

रामनाम जपजाग कियो चहौं सानुराग,
काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान हैं ॥
सुमिरे सहाय रामलखन आखर दोऊ,
जिनके समूह साके जागत जहान हैं।
तुलसी सँभारि ताड़का-सँहारि भारी भट
बेधे बरगदसे बनाइ बानवान हैं ॥३९॥

भावार्थ—बाहुकी पीड़ारूप नीच सुबाहु और देहकी अशक्ति-रूप मारीच राक्षस और ताड़कारूपिणी मुखकी पीड़ा एवं अन्यान्य बुरे रोगरूप राक्षसोंसे मिले हुए हैं। मैं रामनामका जपरूपी यज्ञ प्रेमके साथ करना चाहता हूँ, पर कालदूतके समान ये भूत क्या मेरे काबूके हैं ? (कदापि नहीं।) संसारमें जिनकी बड़ी नामवरी हो रही है वे (रा और म) दोनों अक्षर स्मरण करनेपर मेरी सहायता करेंगे। हे तुलसी ! तू ताड़काका वध करनेवाले भारी योद्धाका स्मरण कर, वह इन्हें अपने बाणका निशाना बनाकर बड़के फलके समान भेदन (स्थानच्युत) कर देंगे ॥ ३९ ॥

बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो,
रामनाम लेत माँगि खात टूकटाक हौं।
परयो लोकरीतिमें पुनीत प्रीति रामराय,
मोहबस बैठो तोरि तरकितराक हौं ॥

खोटे खोटे आचरन आचरत अपनायो,
अंजनीकुमार सोध्यो रामपानि पाक हौं ।
तुलसी गोसाईं भयो भोंड़े दिन भूलि गयो,
ताको फल पावत निदान परिपाक हौं ॥४०॥

भावार्थ—मैं बाल्यावस्थासे ही सीधे मनसे रामचन्द्रजीके सम्मुख हुआ मुँहसे राम-नाम लेता टुकड़ा-टुकड़ी माँगकर खाता था। (फिर युवावस्थामें) लोक-रीतिमें पड़कर अज्ञानवश राजा रामचन्द्रजीके चरणोंकी पवित्र प्रीतिको चटपट (संसारमें) कूदकर तोड़ बैठा। उस समय खोटे-खोटे आचरणोंको करते हुए मुझे अञ्जनीकुमारने अपनाया और रामचन्द्रजीके पुनीत हाथोंसे मेरा सुधार करवाया। तुलसी गोसाईं हुआ, पिछले खराव दिन भुला दिये, आखिर उसीका फल आज अच्छी तरह पा रहा हूँ ॥ ४० ॥

असन-बसन-हीन विषम-विषाद-लीन,
देखि दीन दूबरो करै न हाय हाय को ।
तुलसी अनाथसो सनाथ रघुनाथ कियो,
दियो फल सीलसिंधु आपने सुभायको ॥
नीच एहि बीच पति पाइ भरुहाइगो,
बिहाइ प्रभु-भजन बचन मन कायको ।
तातें तनु पेषियत घोर बरतोर मिस,
फूटि फूटि निकसत लोन रामरायको ॥४१॥

भावार्थ—जिसे भोजन-वस्त्रसे रहित भयंकर विषादमें डूबा हुआ और दीन-दुर्बल देखकर ऐसा कौन था जो हाय-हाय नहीं करता था, ऐसे अनाथ तुलसीको दयासागर स्वामी रघुनाथजीने सनाथ करके अपने स्वभावसे उत्तम फल दिया। इस बीचमें यह नीच जन प्रतिष्ठा पाकर फूल उठा (अपनेको बड़ा समझने लगा) और तन-मन-वचनसे रामजीका भजन छोड़ दिया, इसीसे शरीरमेंसे भयंकर बरतोरके बहाने रामचन्द्रजीका नमक फूट-फूटकर निकलता दिखायी दे रहा है ॥ ४१ ॥

जिऔं जग जानकीजीवनको कहाइ जन,
मरिबेको बारानसी बारि सुरसरिको ।
तुलसीके दुहूँ हाथ मोदक है ऐसे ठाउँ,
जाके जिये मुये सोच करिहैं न लरिको ॥
मोको झूठो साँचो लोग रामको कहत सब,
मेरे मन मान है न हरको न हरिको ।
भारी पीर दुसह सरीरतें बिहाल होत,
सोऊ रघुबीर बिनु सकै दूर करि को ॥४२॥

भावार्थ—जानकी-जीवन रामचन्द्रजीका दास कहलाकर संसारमें जीवित रहूँ और मरनेके लिये काशी तथा गङ्गाजल अर्थात् सुरसरितीर है। ऐसे स्थानमें (जीवन-मरणसे) तुलसीके दोनों हाथोंमें लड्डू है, जिसके जीने-मरनेसे लड़के भी सोच न

करेंगे। सब लोग मुझको झूठा-सच्चा रामका ही दास कहते हैं और मेरे मनमें भी इस बातका गर्व है कि मैं रामचन्द्रजीको छोड़कर, न शिवका भक्त हूँ, न विष्णुका। शरीरकी भारी पीड़ासे विकल हो रहा हूँ, उसको बिना रघुनाथजीके कौन दूर कर सकता है? ॥४२॥

सीतापति साहेब सहाय हनुमान नित,
हित उपदेसको महेस मानो गुरुकै।
मानस बचन काय सरन तिहारे पाँय,
तुम्हरे भरोसे सुर मैं न जाने सुरकै॥
ब्याधि भूतजनित उपाधि काहू खलकी,
समाधि कीजे तुलसीको जानि जन फुरकै।
कपिनाथ रघुनाथ भोलानाथ भूतनाथ,
रोगसिंधु क्यों न डारियत गाय खुरकै॥४३॥

भावार्थ—हे हनुमान्‌जी! स्वामी सीतानाथजी आपके नित्य ही सहायक हैं और हितोपदेशके लिये महेश मानो गुरु ही हैं। मुझे तो तन, मन, वचनसे आपके चरणोंकी ही शरण है; आपके भरोसे मैंने देवताओंको देवता करके नहीं माना। रोग वा प्रेत-द्वारा उत्पन्न अथवा किसी दुष्टके उपद्रवसे हुई पीड़ाको दूर करके तुलसीको अपना सच्चा सेवक जानकर इसकी शान्ति कीजिये। हे कपिनाथ, रघुनाथ, भोलानाथ और भूतनाथ! रोगरूपी महासागरको गायके खुरके समान क्यों नहीं कर डालते? ॥४३॥

कहौं हनुमानसों सुजान रामरायसों,
कृपानिधान संकरसों सावधान सुनिये ।
हरष विषाद राग रोष गुन दोषमई,
बिरची बिरंचि सब देखियत दुनिये ॥
माया जीव कालके करमके सुभायके,
करैया राम बेद कहैं साँची मन गुनिये ।
तुम्हतें कहा न होय हाहा सो बुझैये मोहि,
हौं हूँ रहों मौन ही बयो सो जानि लुनिये ॥४४॥

भावार्थ—मैं हनुमान्‌जीसे सुजान राजा रामसे और कृपानिधान शंकरजीसे कहता हूँ, उसे सावधान होकर सुनिये । देखा जाता है कि विधाताने सारी दुनियाको हर्ष, विषाद, राग, रोष, गुण और दोषमय बनाया है। वेद कहते हैं कि माया, जीव, काल, कर्म और स्वभावके करनेवाले रामचन्द्रजी हैं, इस बातको मैंने चित्तमें सत्य माना है। मैं विनती करता हूँ, मुझे यह समझा दीजिये कि आपसे क्या नहीं हो सकता ? फिर मैं भी यह जानकर चुप रहूँगा कि जो बोया है वही काटता हूँ ॥ ४४ ॥

इति शुभम्
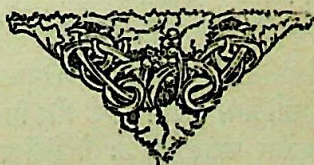
गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीके कुछ ग्रन्थ

श्रीरामचरितमानस [बड़ा]—सटीक, टीकाकार—श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार, मोटा टाइप, पृष्ठ-संख्या १२००, आठ बहुरंगे चित्र, कपड़ेकी जिल्द, मूल्य ... ... ७॥)

श्रीरामचरितमानस—बड़े अक्षरोंमें केवल मूल पाठ, रंगीन चित्र ८, पृष्ठ ५१६, मूल्य ... ... ४)

श्रीरामचरितमानस—मूल, मोटा टाइप, पाठभेदवाली, सचित्र, पृष्ठ ७९६, सजिल्द, मूल्य ... ... ३॥)

श्रीरामचरितमानस—मझला साइज, भाषा-टीकासहित, रंगीन चित्र ८, पृष्ठ १००८, सजिल्द, मूल्य ... ... ३॥)

श्रीरामचरितमानस मूल-गुटका—आकार सुपररायल बत्तीसपेजी, पृष्ठ-संख्या ६८०, हाथके बुने हुए कपड़ेकी सुन्दर जिल्द, श्रीरामदरबारका रंगीन चित्र, मूल्य ... ॥।)

विनय-पत्रिका—सरल हिन्दी-टीकासहित, टीकाकार—श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार, पदोंका सरल हिन्दी भाषामें सबके समझनेयोग्य बड़ा ही सुन्दर भावपूर्ण अर्थ लिखा है और अन्तमें ३७ पृष्ठ पदोंमें आये हुए कथाप्रसङ्गके लगाये गये हैं। पृष्ठ-संख्या ४७२, चित्र १ सुनहरी, मूल्य १), सजिल्द ... १।=)

गीतावली—हिन्दी-अनुवादसहित, पुस्तकमें ऐसे-ऐसे अनूठे प्रसङ्ग हैं, जिन्हें गाते-गाते और सुनते-सुनते मन मस्त होकर आनन्दसे विभोर हो जाता है। पृष्ठ ४४४, चित्र १ रंगीन मूल्य १), स० १।=)

कवितावली—हिन्दी-अनुवादसहित, पुस्तकमें श्रीगोस्वामीजी महाराजने रामायणकी तरह ही सात काण्डोंमें श्रीरामलीलाका वर्णन कवित्तोंमें किया है। पृष्ठ २२४, १ सुन्दर तिरंगा चित्र, मूल्य ॥-)

दोहावली—भाषानुवादसहित, अनुवादक—श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार। नीति, धर्म, प्रेम, वैराग्य, भक्ति और शिक्षा आदि आध्यात्मिक विषयोंपर करीब पौने छः सौ दोहोंका यह बड़ा ही अनूठा संग्रह है। श्रीराम-चतुष्टयका तिरंगा १ चित्र, पृष्ठ १९६ ॥)

पता—**गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)**

मिलनेका पता—

गीताप्रेस, पो॰ गीताप्रेस (गोरखपुर)

अष्टक अष्ट रत्नम्

❁

स्वामी-

शंकराचार्य

कृत।

❁

मुद्रक-

श्री विश्वेश्वर प्रेस

काशी।

प्रकाशक--फर्म बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर,

सन १९४९ राजादरवाजा बनारस सिटी। मूल्य =)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अष्टक अष्ट रत्नम् ।

१ विश्वनाथाष्टकम् ।

आदिशंभु स्वरूप मुनिवर चन्द्रशीशजटाधरं ।
मुंडमालविशाल लोचन वाहनं वृषभध्वजम् ॥
नागचन्द्र त्रिशूल डमरूभस्मअङ्गविहंगमम् ।
नीलकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथमहेश्वरम् ॥ १ ॥
गंगसंगप्रसंग सरिता कामदेव सुसेवितं ।
नाद विन्दुसुयोगसाधनपंचवक्त्रत्रिलोचनम् ॥
इन्दुबिन्दु विराज शशिधर सेवितंसुरवंदितं ।
नीलकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथमहेश्वरम् ॥ २ ॥
ज्योतिर्लिङ्गसुलिंगफणिमणिदिव्यदेवसुसेवितं ।
मालती तनुपुष्प माला गंधधूप निवेदितं ॥
अनलकुंभसुकुंभझलकतकलशकंचनशोभितं ।
नीलकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथमहेश्वरम् ॥ ३ ॥
मुकुटक्रीटसुकनककुंडलमंडितं मुनिरंजितं ।

हारमुकुताकनकरेखारेखितं सुविशेषितम् ॥
गंधमर्दनशैल आसन आसनं परकासनं ।
नीलकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथमहेश्वरम् ॥ ४ ॥
मेघडंबरछत्रधारन चरनकमल विशालितं ।
पुष्परथपःमदन मूरति गौरिसंगसदाशिवम् ॥
क्षेत्रपालसुपाल भैरवकुसुम नवग्रहभूषितं ।
नीलकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथमहेश्वरम् ॥ ५ ॥
त्रिपुरदैत्यसुदैत्य दानव प्राप्यतेफलदायकं ।
रावणो दशकमलमस्तक अङ्गजलवरसायकम् ॥
भक्तजनेनाहर्निशि सेव्यमान पदपङ्कजम् ।
नीलकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथमहेश्वरम् ॥ ६ ॥
मथितदधिजलशेषविगलित भ्रमतमेरुसुमेरुकं ।
स्रवत विगलितदीपप्रनवतयुग्मनेत्रसुनेत्रकं ॥
महादेव सुदेव सुरपति सर्वदेव विश्वंभरं ।
नीलकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथमहेश्वरम् ॥ ७ ॥
रुद्र रूप सुतेजनं कृत भक्तमान हलाहलं ।
गगनवेधितअखिलधारा आदिअन्तसमाहितम् ॥
काम कुंजरमान केशव महाकाल विश्वेश्वरं ।
नीलकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथमहेश्वरम् ॥ ८ ॥

ऋतुबसंतसु चक्र चौदशिप्राप्यते फलदायकं ।
पूर्वकाशी भयेवासी मनुज मंगल दायकम् ॥
अम्बिके तट वैद्यनाथं शैल शिखर महेश्वरं ।
नीलकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथमहेश्वरम् ॥ ६ ॥

इति विश्वेश्वराष्टकं संपूर्णम् शुभमस्तु ।

२ काल भैरवाष्टकम् ।

देवराज सेव्यमान पावनांघ्रि पंकजं ।
व्यालयज्ञ सूत्र मिन्दु शेखरं कृपाकरं ॥
नारदादि योगिवृन्दवंदितं दिगम्बरम् ।
काशिका पुराधि नाथ काल भैरवं भजे ॥ १ ॥
भानु कोटि भास्करं भवाब्धितारकं परं ।
नीलकण्ठ मीप्सितार्थ दायकं त्रिलोचनं ॥
काल कालमम्बुजाक्षमक्ष शूलमक्षरम् ।
काशिका पुराधि नाथ काल भैरवं भजे ॥ २ ॥
शूलटंक पाश दंडपाणि मादि कारणम् ।
श्याम काय मादि देवमक्षरं निरामयम् ॥
भीम विक्रमं प्रभुं विचित्र तांडव प्रियम् ।

काशिका पुराधि नाथ काल भैरवं भजे ॥ ३ ॥
भक्ति मुक्ति दायकं प्रकाश चारु विग्रहम् ।
भक्त वत्सलं स्थितिं समस्तलोक विग्रहम् ॥
निक्वणं मनोज्ञ हेम किंकिणी लसत्कटिम् ।
काशिका पुराधि नाथ काल भैरवं भजे ॥ ४ ॥
धर्मसेतु पालकं त्वधर्म मार्ग नाशकं ।
कर्म पाश मोचकं सुसर्वदायकं विभुम् ॥
स्वर्ण पर्ण शेष पाश शोभितांग मण्डलम् ।
काशिका पुराधि नाथ काल भैरवं भजे ॥ ५ ॥
रत्न पादुका प्रभा भिराम पाद युग्मकं ।
नित्यम द्वितीयमिष्ट दैवतं निरंजनम् ॥
मृत्यु दर्प नाशनं करालदंष्ट्र मोक्षणम् ।
काशिका पुराधि नाथ काल भैरवं भजे ॥ ६ ॥
अट्टहास भिन्न पद्मजांड कोश सन्ततिम् ।
सुदृष्टि पात नष्ट पापजाल मग्रशासनम् ॥
अष्ट सिद्धि दायकं कपालमालि कंधरं ।
काशिका पुराधि नाथ काल भैरवं भजे ॥ ७ ॥
भूत संघ नायकं विशाल कीर्ति दायकं ।

काशिवास लोक पुण्य पापशोधकं विभुम् ॥
नीति मार्ग कोविदम्पुरातनं जगत्पतिम् ।
काशिका पुराधि नाथ काल भैरवं भजे ॥ ८ ॥
काल भैरवाष्टकं पठंति ये मनोहरं ।
ज्ञान मुक्ति साधनं विचित्र पुण्य वर्द्धनम् ॥
शोक मोह दैन्य लाभ पाप ताप नाशनं ।
ते प्रयान्ति काल भैरवांघ्रि सन्निधिं ध्रुवम् ॥ ९ ॥

३ शीतलाष्टकम् ।

अस्य श्री शीतला स्तोत्रस्य महादेव ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः शीतला देवता लक्ष्मीर्बीजम् भवानीशक्तिः सर्व बिस्फोटक निवृत्तये जपेविनियोगः ।

ईश्वरउवाच ।

वन्देऽहंशीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बराम् ।
मार्जनी कलशोपेतां सूर्पालंकृत मस्तकाम् ॥
वन्देऽहंशीतलां देवीं, सर्वरोग भयापहाम् ।
यामासाद्य निवर्तेत विस्फोटक भयंमहत् ॥
शीतले शीतले नित्यं यो ब्रूयात्पाप पीडितः ।
विस्फोटक भयं घोरं क्षिप्रंतस्य प्रणश्यति ॥

यस्त्वामुदरमध्ये तु ध्यात्वा पूजयते नरः ।
विस्फोटक भयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥
शीतले ज्वरदग्धस्य पूति गंध युतस्य च ।
प्रणष्टचक्षुषः पुंसस्त्वा माहुर्जीव नौषधम् ॥
शीतले तनुजानुग्रान्नृणां हरसि दुस्त्यजान् ।
विस्फोटक विजीर्णानां त्वमेकामृत रूपिणी ॥
गलगंड ग्रहा रोगा ये चान्यद्दारुणा नृणाम् ।
त्वदनुध्यान मात्रेण शीतले यांति संक्षयम् ॥
न मंत्रं नौषधं तस्य पापरोगस्य विद्यते ।
त्वमेका शीतले धात्री नान्यां पश्यामि देवतां ॥
मृडालये तु सदृशी नाभिहृन्मध्ये संस्थिताम् ।
यस्त्वां संचिंतयेद्देवि तस्य मृत्युर्नजायते ॥
अष्टकं शीतला देव्या यो नरः प्रपठेत्सदा ।
विस्फोटक भयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥
श्रोतव्यं पठितव्यं च श्रद्धा भक्ति समन्वितः ।
उपसर्ग विनाशाय परं स्वस्त्ययनं महत् ॥
शीतले त्वं जगत्माता शीतले त्वं जगत्पिता ।
शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमोनमः ॥

रासभो गर्दभश्चैव खरो वैशाख नन्दन ।
शीतला वाहन श्चैव दूर्वा कन्द निकन्दनः ॥
एतानि खरनामानि शीतला ग्रेतु यः पठेत् ।
तस्य गेहे शिशूनां वै शीतलारुग् न जायते॥
शीतलाष्टक मेतत्तुनदेयं यस्य कस्यचित् ।
दातव्यं च सदा तस्मै श्रद्धा भक्ति युताय वै ॥

॥ इति शीतलाष्टकम् ॥

४ बद्रीनाथस्तोत्रम् ।

श्रीबद्रीनाथोजयति ।

श्रीपवनमंद सुगंध शीतल हेम मंदिर शोभितं ।
निकट गंगावहति निर्मल श्रीबद्रीनाथ विश्वंभरम्॥ १ ॥
शेषसुमिरन करत निशिदिन धरत ध्यान महेश्वरं ।
वेदब्रह्मा करत अस्तुति श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरं ॥ २ ॥
इन्द्र चन्द्र कुबेर दिनकर धूपदीप प्रकाशितं ।
सिद्ध मुनि जन करत जय जय श्रीब० ॥ ३ ॥
यक्ष किन्नर करत कौतुक ज्ञान गर्व विकाशितं ।
श्री लक्ष्मी कमला चँवर डोलावैं श्री ब० ॥ ४ ॥
शक्ति गौरी गणेश शारद नारदमुनि उच्चरत ।

श्री योग्य ध्यानं अमर लीला श्री ब० ॥ ५ ॥
कैलास में एक देवनिरंजन शैलशिखर महेश्वरं।
श्रीराजायुधिष्ठिरकातस्तुति श्री बद्रिनाथविश्वंभरं ॥६॥
श्रीबद्रीनाथ पंचरत्नपठतपाप विनाशितम्।
कोटि तीर्थ भवेत्पुण्यं प्राप्यते फलदायकम् ॥ ७ ॥

इति बद्रीनाथस्तोत्रम्।

५ अन्नपूर्णाऽष्टकम्।

नित्यानंदकरी परा भयकरी सौन्दर्य रत्नाकरी।
निर्धूताखिल घोरपावन करी प्रत्यक्ष माहेश्वरी ॥
प्रालेयाचल वंशपावन करी काशीपुराधीश्वरी।
भिक्षां देहि कृपा वलंवनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥१॥
नाना रत्न विचित्र भूषणकरी हेमांबराडंबरी।
मुक्ताहार बिलंबमान बिलसद्वक्षोज कुंभांतरी ॥
काश्मीरागरुवासितारुचिकरी काशीपुरा० ॥ २ ॥
योगानंदकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थनिष्ठाकरी।
चंन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरत्नाकरी ॥
सर्वैश्वर्यसमस्त वांच्छनकरी काशीपुरा० ॥ ३ ॥
कैलाशाचल कंदरालयकरी गौरीउमाशांकरी।

रकौमारी निगमार्थगोचरकरी ओंकारबीजाक्षरी ।।
मोक्ष द्वार कपाट पाटन करी काशीपुरा० ।। ४ ।।
दृश्या दृश्य प्रभूतवाहनकरी ब्रह्माण्डभांडोदरी ।
लीला नाटक सूत्रभदेनकरी विज्ञानदीपांकुरी ।।
श्री विश्वेशमनः प्रसादन करी काशी० ।। ५ ।।
उर्वीसर्व जनेश्वरी भगवती मातान्नपूर्णेश्वरी ।
वेणी नील समानकुंतलहरी नित्यान्नदानेश्वरी ।।
सर्वांनदं करी दशा शुभकरी काशीपुरा० ।। ६ ।।
आदिक्षांतिसमस्त वर्णनकरी शंभोस्त्रिभावाकरी ।
काश्मीरात्रिजलेश्वरी त्रिलहरीनित्यांकुराशर्वरी ।।
कामाकांक्षकरी जनोदयकरी काशीपुरा० । ७ ।।
देवीसर्वविचित्र रत्नरचिता दाक्षायणीसुन्दरी ।
वामस्वादुपयोधरप्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।।
भक्ताभीष्टकरी दशाशुभकरी काशीपुरा० ।। ८ ।।
चंद्रार्कानलकोटि कोटिसदृशी चन्द्रांशुबिम्बाधरी ।
चन्द्रार्काग्निसमानकुंतलहरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।।
मालापुस्तक पाशसांकुशधरी काशीपुरा० ।। ९ ।।
यज्ञत्राणकरी महाऽभयकरी माताकृपासागरी ।

साक्षान्मोक्षकरी सदाशिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी ॥
दक्षाक्रंदकरी निरामयकरी काशीपुरा० ॥१०॥
अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकरप्राणवल्लभे ।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥११॥
माताचपार्वतीदेवी पितादेवोमहेश्वरः ।
बांधवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥१२॥

इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितंअन्नपूर्णाष्टकंसंपूर्णम् ।

५ विन्ध्येश्वरी स्तोत्रम् ।

निशुम्भशुम्भगर्जनीं प्रचण्डमुण्डखण्डनीं ।
बने रणे प्रकाशिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीम् ॥ १ ॥
त्रिशूलमुण्डधारिणीं धराविघातहारिणीं ।
गृहे गृहे निवासिनीं भजामि० ॥ २ ॥
दरिद्रदुःख हारिणीं सतां विभूतिकारिणीं ।
वियोग शोक हारिणीं भजामि० ॥ ३ ॥
लसत्सुलोल लोचनां लतां सदेवरप्रदां ।
कपोल शूल धारिणीं भजामि० ॥ ४ ॥
करे मुदा गदा धरां शिवा शिवप्रदायिनीं ।
वरां वराननां शुभां भजामि विन्ध्यवासिनीम् ॥ ५ ॥

ऋषीन्द्रजामिनीप्रदा त्रिधास्य रूपधारिणी ।
जलेस्थले निवासिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीं ॥ ६ ॥
विशिष्टसृष्टिकारिणीं विशालरूप धारिणीं ।
महोदरां विशालिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीं ॥ ७ ॥
पुरंदरादिसेवितां मुरादि वंश खण्डिनीं ।
विशुद्ध बुद्धि कारिणीं भजामि विन्ध्येश्वरीं ॥ ८ ॥

इति विन्ध्येश्वरी स्तोत्रम् ।

७ संकटाष्टकम् ।

नमो काशिनीवासिनी गंगती रे सदाअर्चितंचंदनं रक्तपुष्पं ।
सदावंदितं पूजितंसर्वदेवं नमो संकटा कष्ट हरणी भवानी ॥ १ ॥
नमो मोहिनी मोहितं भूतसैन्यंसदा चन्द्रवदनी हँसै विकरालं ।
सदा मृगनैनी गुणारूपवर्णा नमो संकटाकष्ट हरणी भवानी ॥ २ ॥
नमोखड्ग हस्तेगले रुण्डमाला नमोगर्जितं भूमिकंपायमानं ।
सदामर्दितं भूतमहिषासुरेण नमो संकटा कष्टहरणी भवानी ॥ ३ ॥
नमोमुक्तिदेवी नमो वेदमाता सदायोगिनीयोगिनीयोगगम्या ।
सदाकामिनी मोहितंकामराज्यं नमोसंकटा कष्टहरणी भवानी ॥ ४ ॥
नमोपुष्पशय्या गलेरुण्डमाला सदाकोकिला कांचनं रूपवर्णा ।
सदारणविशेशत्रुसंहार करणी नमोसंकटाकष्ट हरणी भवानी ॥ ५ ॥
इदं पञ्चरत्नं पठेत्प्रात कालेहरेत्पाप तनके बढ़े धर्म ज्ञानम् ।
सदादुःखमें कष्टमें रक्षपालम् नमोसंकटाकष्टहरणी भवानी ॥ ६ ॥
तुहीसंकटेयोगिनी योगधारं तुहीकामिनीमोहितंकामराज्यं ।

तुही विश्वमाता करे खड्गधारं नमोसंकटाकष्टहरणी भवानी ॥ ७ ॥
संकटाष्टक मिदं पुण्यं प्रातः काले पठेन्नरः ।
तस्य पीड़ा विनिर्याति सर्व काम फलं लभेत् ॥ ८ ॥
इति संकटाष्टकं सम्पूर्णम् ।

८ गंगाष्टकम् ।

मातः शैलसुतासपत्निवसुधाशृंगार हारावलि ।
स्वर्गारोहणवैजयंति भवतीं भागीरथीं प्रार्थये ॥
त्वत्तीरेवसतस्त्वदंबुपिबतस्त्वद्वीचिषु प्रेंखतः ।
त्वन्नामस्मरतस्त्वदर्पितदृशः स्यान्मेशरीरव्ययः ॥ १ ॥
त्वत्ती रे तरुकोटरांतरगतोगंगे विहंगोवरं ।
त्वन्नी रेनरकांतकारिणिवरंमत्स्योऽथवाकच्छपः ॥
नैवान्यत्रमदांध सिंधुर घटा संघट्टघंटारण- ।
त्कारस्तत्रसमस्तवैरिवनितालब्धस्तुतिर्भूपतिः ॥ २ ॥
उक्षापक्षीतुरगउरगः कोऽपिवा वारणोवा ।
वाराणस्यांजनन मरणं क्लेशदुःखासहिष्णुः ।
नैवान्यत्र प्रविरलरणत्किंकिणी क्वाणमिश्रं ।
वारस्त्रीभिश्च मरमरुतावीजितो भूमिपालः ॥ ३ ॥
काकैर्निष्कुषितंश्वभिः कवलितंगोमायुभिर्लुंठितं ।
स्रोतोभिश्चलितंतटांबुलुलितंवीचीभिरांदोलितम् ॥

दिव्यस्त्रीकरचारुचामरमरुत्संवीज्यमानः कदा ।
प्रद्येऽहंपरमेश्वरित्रिपथगे भागीरथि स्वंवपुः ॥ ४ ॥
अभिनव बिसवल्ली पाद पद्मस्य ।
विष्णोर्मदन मथन मौलेर्मालती पुष्प माला ॥
जयतिजय पताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्याः ।
क्षपित कलिक लंका जाह्नवी नः पुनातु ॥ ५ ॥
एतत्तालतमालसालसरलव्यालोलवल्लीलताच्छन्नं।
सूर्यकर प्रताप रहितं शंखेंदुकुंदोज्ज्वलम् ॥
गंधर्वामर सिद्ध किन्नरवधूतुंगस्तनास्फालितं ।
स्नानाय प्रतिवासरंभवतु मे गांगंजलंनिर्मलम् ॥ ६ ॥
गांगंवारि मनोहारि मुरारि चरण च्युतम् ।
त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि पुनातु माम् ॥ ७ ॥
पापा पहारि दुरि तारित रंग धारि ।
शैल प्रचारि गिरिराज गुहा विदारि ॥
झंकार कारि हरि पाद रजो पहारि ।
गांगं पुनातु सततं शुभ कारिवारि ॥ ८ ॥
गंगाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते ।
वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्यः ॥
प्रक्षाल्य गात्रकलि कल्मषपंक माशु ।
मोक्षं लभेत्पतति नैव नरां भवाब्धौ ॥ ९ ॥

९ श्री रामाष्टकम् ।

हे रामा पुरुषोत्तमा नरहरे नारायणः केशवा ।
गोविन्दा गरुड़ध्वजा गुणनिधे दामोदरा माधवा ॥
हे कृष्ण कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते ।
वैकुंठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहि माम् ॥ १ ॥
आदौ रामतपोवनादि गमनं हत्वा मृगं काञ्चनम् ।
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम् ॥
बाली निर्दलनं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनम् ।
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननं एतद्धि रामायणम् ॥ २ ॥

श्रीविश्वेश्वर, प्रेस काशी में मुद्रित ।

विद्यार्थियों के लाभार्थ ! ज्योतिष ग्रन्थ !!

रत्नद्योतः ।

(भाषा टीका)

इस ज्योतिष ग्रंथ में विवाहादि के सम्बन्ध में वर कन्या का निर्णय, यात्राकाल में शुभाशुभ विचार गृहों का दशा फल आदि आदि आवश्यक विषयों का लाभा लाभ सरल श्लोकों में संग्रह है, थोड़े पढ़े लिखे पुरोहितों के लिये इसकी एक प्रति बड़े काम की है । मूल्य- ।।।=)

षट्पञ्चासिका ।

इसमें ज्योतिष द्वारा जीवन में उत्पन्न होने वाले प्रश्नों का उत्तर और किस प्रश्न का उत्तर किस भाव से निकालना चाहिये आदि आदि बातों का भलीभाँति विवेचन किया गया है । मूल्य भी केवल- ।।।)

पुस्तकों के मिलने का पता-

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर,

राजादरवाजा बनारस सिटी ।